INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

'एकलव्य का अंगूठा' में अभिव्यक्त व्यंग्य

अनिल शिवाजी झोळ (शोधार्थी)
सहा. प्राध्यापक,
वाघीरे महाविद्यालय, सासवड
anilzol191282@gmail.com
प्रोफेसर (डॉ.) सदानंद भोसले (शोध-निर्देशक)
वरिष्ठ आचार्य एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
kbhosale3131@gmail.com

सारांश :

वागीश सारस्वत का साहित्य समाज, राजनीति और राष्ट्र की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य प्रस्तुत करता है। उनके व्यंग्य भ्रष्टाचार, अवसरवाद, नारी-दुर्दशा और आम आदमी की पीड़ा को उजागर करते हुए सामाजिक चेतना, मानवीय मूल्यों और जागरूकता को सशक्त बनाने का प्रयास करते हैं। यह शोध आलेख उनकी कविताओं और व्यंग्य रचनाओं के सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय सरोकारों का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। उनका लेखन समाज की विसंगतियों, अन्यायपूर्ण व्यवस्थाओं और आम आदमी की पीड़ा को तीखे व्यंग्य के माध्यम से उजागर करता है। उनके काव्य संग्रह 'एकलव्य का अंगूठा' और 'छप्पर में उड़से मोरपंख' तथा व्यंग्य संकलन 'तरकश के तीर', 'चमचमाई की जय हो' और 'व्यंग्य चालीसा' उनके रचनात्मक वैविध्य और सामाजिक प्रतिबद्धता के सशक्त प्रमाण हैं।

वागीश सारस्वत हिंदी साहित्य के एक सजग, संवेदनशील और बहुआयामी रचनाकार हैं। इस अध्ययन में उनके व्यंग्य की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि, व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ति, व्यंग्यार्थ आदि के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है। उनका व्यंग्य केवल हास्य उत्पन्न करने तक सीमित नहीं है बल्कि वह सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्यों और लोकतांत्रिक जिम्मेदारी को जाग्रत करने का माध्यम बनता है। उनके 'एकलव्य का अंगूठा' कविता संग्रह की कविताओं में सत्ता, न्याय व्यवस्था, बेरोज़गारी, महँगाई, आतंकवाद, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, दहेज प्रथा और नारी अस्मिता जैसे ज्वलंत मुद्दों को अभिव्यक्त किया हैं। उनके व्यंग्य में आम आदमी, गरीब, स्त्री और हाशिए पर खड़े वर्ग की पीड़ा केंद्रीय विषय के रूप में उभरती है। उनका साहित्य यह स्पष्ट करता है कि वास्तविक राष्ट्र-निर्माण केवल नारों से नहीं बल्कि सामाजिक न्याय, नैतिक साहस और मानवीय संवेदनाओं से संभव है। इस प्रकार वागीश सारस्वत का साहित्य हिंदी व्यंग्य परंपरा को समृद्ध करते हुए समाज को आत्ममंथन और परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है।

बीजशब्द :

व्यंग्य की पृष्ठभूमि, सामाजिक एवं राजनीति व्यंग्य, भ्रष्टाचार एवं अवसरवादिता, विद्रूपता और कुरीतियां, प्रशासनिक विडंबना, संवेदनशीलता, संघर्ष और सकारात्मक परिवर्तन आदि।

प्रस्तावना :

वागीश सारस्वत प्रभावी व्यक्तित्व के धनी हैं। लेखन उनकी अभिव्यक्ति और आजीविका दोनों है। तीखे व्यंग्य के बावजूद वे विनम्र हैं और नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा हैं। उनके दो काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं- 'एकलव्य का अंगूठा' और 'छप्पर में उड़से मोरपंख'। उनके व्यंग्य संकलनों में 'तरकश के तीर', 'चमचमाई की जय हो' और 'चुनिंदा व्यंग्य' प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने 'व्यंग्य चालीसा' तथा 'व्यंग्यत्रयी' का संपादन किया हैं। शरद जोशी पर उनका शोध ग्रंथ सन 2013 में प्रकाशित हुआ है। वे फिल्म लेखन, निर्देशन और व्यंग्य कॉलम लेखन से भी जुड़े रहे हैं। हिंदी साहित्य में उनका लेखन विद्यार्थी जीवन से ही अनुभव-आधारित रहा है। व्यंग्य में विशेष रुचि के कारण उन्होंने शरद जोशी पर महत्वपूर्ण कार्य किया। वे लेखक, व्यंग्यकार, कवि, पत्रकार और फिल्म निर्माता के रूप में बहुआयामी व्यक्तित्व हैं।

'एकलव्य का अंगूठा' उनका पहला काव्य संग्रह है जो सन 2005 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की कई कविताएँ समाज और राजनीति के विभिन्न पहलुओं को छूने वाली हैं। इस संग्रह में राजनीतिक व्यंग्य का एक प्रमुख स्थान है। 'छप्पर में उड़से मोरपंख' वागीश सारस्वत का दूसरा काव्य संग्रह है जिसमें गहन चिंतन से रचित कविताएँ प्रेम, जीवन, साहस और सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करती हैं। व्यंग्यकार के रूप में वागीश जी भी सक्रिय रहे हैं। उनकी चर्चित व्यंग्य किताबों में 'तरकश के तीर', 'चमचमाई की जय हो' और 'व्यंग्य चालीसा' शामिल हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने व्यंग्य ऋषि शरद जोशी पर भी लिखा है। उनकी पुस्तक 'व्यंग्यर्षि शरद जोशी' शरद जोशी के व्यंग्य लेखन पर केंद्रित है। इस पुस्तक में शरद जोशी के संपूर्ण लेखन का अध्ययन और विश्लेषण किया गया है। वे शरद जोशी पर समीक्षात्मक पुस्तक के लेखक, संपादक, व्यंग्यकार और शिक्षक हैं। उनके साहित्यिक-पत्रकारिता योगदान पर अनेक पुरस्कार मिले हैं। फिरोज अशरफ कहते हैं, "हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, परम मित्र यज्ञ शर्मा और सूर्यबाला के साथ-साथ, वागीश सारस्वत हिंदी व्यंग्य के भविष्य के उज्ज्वल हस्ताक्षर हैं।"[1] फिरोज अशरफ के अनुसार वागीश सारस्वत हिंदी व्यंग्य के उज्ज्वल प्रतिनिधि हैं। उनका बहुआयामी लेखन साहित्य को समृद्ध करता है और पाठकों को सोचने तथा बदलाव के लिए प्रेरित करता है।

व्यंग्य विश्लेषण :

हिंदी साहित्य में प्रचलित 'व्यंग्य' शब्द संस्कृत से आया है। इसका निर्माण 'वि' उपसर्ग और 'ण्यत्' प्रत्यय के संयोग से माना जाता है। मूलतः इसका प्रयोग शब्द-शक्ति के संदर्भ में हुआ है। इसी कारण हिंदी शब्दकोशों में 'व्यंग्य' का अर्थ संकेतात्मक और व्यंजना आधारित रूप में मिलता है। शब्दों में अर्थ प्रकट करने की जो क्षमता होती है, उसे शब्द-शक्ति कहा गया है। शब्द-शक्तियाँ तीन मानी गई हैं- अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। ये क्रमशः वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ का बोध कराती हैं। 'वि + अंग' के योग से भी व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ति मानी जाती है। इसका आशय है किसी विषय को उसके बाहरी रूप से हटकर उसके आंतरिक, छिपे या विरोधाभासी पक्ष के माध्यम से प्रस्तुत करना। डॉ. बालेंदु शेखर तिवारी के अनुसार व्यंग्य

का संबंध 'ध्वनि' और 'वक्रोक्ति' से है क्योंकि इसमें अर्थ सीधा न होकर परोक्ष रूप में व्यक्त होता है। संस्कृत काव्यशास्त्र में 'व्यंग्य' शब्द का प्रयोग मुख्यतः 'व्यंग्यार्थ' के रूप में मिलता है, जिसे ध्वनि के अंतर्गत रखा गया है। आनंदवर्धन ने व्यंग्यार्थ को काव्य का प्राण माना है। व्यंग्य केवल हास्य का साधन नहीं बल्कि समाज और मनुष्य की विसंगतियों को उजागर करने का प्रभावी माध्यम है। इसके सही अर्थ को वही पाठक समझ सकता है। जो शब्दों के सतही अर्थ से आगे बढ़कर उनके निहित भाव और उद्देश्य को ग्रहण कर सके।

वर्तमान हिंदी में 'व्यंग्य' को प्रायः अंग्रेजी शब्द 'Satire' का पर्याय माना जाता है। हिंदी शब्दकोशों में 'Satire' के लिए व्यंग्य, व्यंग्य रचना, प्रहसन, उपहास और विद्रूप जैसे शब्द मिलते हैं। डॉ. कामिल बुल्के के अनुसार इन सभी शब्दों का उद्देश्य समाज, व्यक्ति या व्यवस्था की कमियों, पाखंड और विसंगतियों को उजागर करना है। अंतर केवल अभिव्यक्ति की शैली में होता है कहीं हल्का हास्य होता है तो कहीं तीखा कटाक्ष। डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'Irony' को व्यंग्य का समानार्थक और 'Satire' को विकृति का पर्याय माना है। आयरनी भाषा की शैली है जबकि सटायर व्यापक सामाजिक आलोचना का रूप है। 'Satire' शब्द लैटिन के 'Satura' से बना है जिसका प्रारंभिक अर्थ 'भरपूर' था। जो बाद में विभिन्न तत्वों के मिश्रण के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। हिंदी में व्यंग्य का अर्थ समय के साथ बदलता रहा है और आज यह ताना, चुटकी, कटाक्ष और उपहास के रूप में प्रचलित है।

वागीश सारस्वत एक सजग व्यंग्यकार हैं। जिन्होंने समाज की कमजोरियों, विसंगतियों और सुधार योग्य पहलुओं को सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके व्यंग्य में सामाजिक जागरूकता, नैतिक मूल्यों, मेहनत, समान अवसर, महिलाओं और बुजुर्गों के सम्मान जैसे विषय प्रमुख हैं। वे मध्यमवर्गीय जीवन की चुनौतियों, भ्रष्टाचार, पाखंड, अवसरवादिता और अंधविश्वास को उजागर करते हुए पाठकों को सोचने और बदलाव के लिए प्रेरित करते हैं। व्यंग्य दुराचार और आडंबर को बेनकाब कर नैतिक चेतना जगाता है। उनका साहित्य सामाजिक सुधार, समानता और सकारात्मक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम है। एस. एस. पाण्डेय लिखते हैं, "सामाजिक स्तरीकरण के फलस्वरूप सामाजिक असमानता देखने को मिलती हैं क्योंकि समाज में मान, आदर, पद-प्रतिष्ठा, आर्थिक अवसर आदि असमान ढंग से वितरित रहते हैं।"[2] उनके अनुसार समाज में स्तरभेद से असमानता जन्म लेती है। वागीश ने अपने व्यंग्य में भेदभाव, संघर्ष और पीड़ा की सच्चाई उजागर की है।

हिंदी व्यंग्य परंपरा में वागीश सारस्वत का साहित्य विशिष्ट है। उनका व्यंग्य मानवीय संवेदना के साथ लोकतंत्र, सत्ता और आम आदमी की पीड़ा को प्रभावी ढंग से उजागर करता है। उनकी कविताएँ समाज की यथार्थ समस्याओं और अन्यायपूर्ण व्यवस्थाओं पर तीखा व्यंग्य प्रस्तुत करती हैं। कविता 'एकलव्य का अंगूठा' न्याय व्यवस्था और शक्ति के दुरुपयोग को महाभारत कथा के आधुनिक संदर्भ में उजागर करती है। कवि कहते हैं-

गलती तुम्हारी नहीं थी एकलव्य
जो काट दिया अंगूठा
द्रोणाचार्य के माँगने पर

तुम जानते थे
सत्य के हिमायती नहीं है द्रोणाचार्य[3]

कवि ने दिखाया है कि प्रतिभाशाली और ईमानदार व्यक्ति भी भ्रष्ट और अन्यायपूर्ण व्यवस्था के सामने असहाय हो जाता है। 'सत्य के हिमायती नहीं है द्रोणाचार्य' यह दिखता है कि सत्ता में स्वार्थ और नीतिहीनता के सामने न्याय और ईमानदारी का कोई महत्व नहीं रहता। कवि संदेश देते हैं कि न्याय व्यवस्था केवल नियमों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। पक्षपात, शक्ति और पद का दुरुपयोग योग्य व्यक्तियों के हक को दबाता है। समाज की निष्क्रियता अन्याय को बढ़ावा देती है। अंगूठा कथा न्याय की कमजोर और प्रतीकात्मक स्थिति दर्शाती है। उन्हीं के शब्दों में-

अगर कटता रहेगा
एकलव्यों का अंगूठा
तो शिक्षा का लहलहाता पेड़
ठूँठ बन जाएगा
द्रोणाचार्यों की वजह से
'गुरु' शब्द
इस दुनिया का
सबसे बड़ा झूठ बन जाएगा[4]

कवि स्पष्ट करते हैं कि जब योग्य और मेहनती लोगों का हक छीना जाता है। तो शिक्षा और ज्ञान का विकास रुक जाता है। 'एकलव्यों का अंगूठा कटता रहेगा' अन्याय और भ्रष्टाचार से प्रतिभा बाधित होने को दर्शाता है। व्यंग्य दिखाता है कि न्याय केवल कानून नहीं बल्कि नैतिक साहस और सामाजिक जागरूकता पर भी निर्भर है। 'बाकी सब ठीक है' कविता सामाजिक और प्रशासनिक विडंबनाओं को उजागर करती है। भूख, महँगाई, अन्याय और हिंसा के बीच आम जनता की पीड़ा को कवि ने तीखे व्यंग्य में चित्रित किया है। वे कहते हैं-

खूनी को नहीं मिलती बेड़ियां
बलात्कारी खुलेआम
घूमते हैं यहाँ वहाँ
अपहरण के आरोपी
पकड़ में नहीं आते
डाकू बच जाते हैं
पर तात्या के मासूम भाई
पकड़ लिए जाते हैं
और, कर दिए जाते हैं
पुलिस एनकाउंटर में ढेर
बाक़ी सब ठीक है

बाकी सब ख़ैर...।[5]

कवि इस कविता में अन्यायपूर्ण व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य करते हैं। अपराधी बच निकलते हैं। निर्दोष दंडित होते हैं। फिर भी आम नागरिक का 'बाक़ी सब ठीक है' कहना सामाजिक संवेदनहीनता और यथार्थ की सजीव अभिव्यक्ति है। 'गणतंत्र की झुर्रियाँ' में कवि लोकतंत्र की असली स्थिति दिखाते हैं। नेता भ्रष्टाचार में अफसर जनता का शोषण करते हैं और गरीब वर्ग अपनी जमीन के अधिकार के लिए भटकता है। कवि बताते हैं–

मेरे चेहरे पर झुर्रियों के निशान
कुछ और नहीं
बहुमत का अभिशाप है
भारत में
त्रिशंकु-सा लटका है लोकतंत्र
हावी है ठोकतंत्र
अपराध राजनीति का मूलमंत्र है[6]

कवि लोकतंत्र की असंतुलित और दिखावटी स्थिति पर व्यंग्य करते हैं। सत्ता में ठोकतंत्र, राजनीतिक भ्रष्टाचार और बहुमत का दबाव आम आदमी की परेशानियाँ उजागर करते हैं। समाज की हर वर्ग की पीड़ा सामने आती है। 'झोपड़ियों का सूर्य' में कवि अमीर और गरीब के बीच गहरी असमानता दिखाते हैं। महलों की चकाचौंध के बीच झोपड़ियों में अंधेरा और भूख का साम्राज्य व्यंग्यात्मक ढंग से उजागर किया गया है। कवि कहते हैं–

भूख के बादल उसको ढक लेते हैं
सूखा अस्थि समूह टूट जाता है चरमर
झोपड़ियों में उगने वाला सूर्य
दिवस अवसान काल से पहले
जाकर छिप जाता है.....।[7]

कवि इस कविता में समाज की असमान व्यवस्था पर व्यंग्य करते हैं। समानता और न्याय के ढोल के बावजूद गरीबों के हिस्से केवल भूख, अभाव और कठिन जीवन आते हैं। कविता 'मेरा हिंदुस्तान कहाँ है' सामाजिक व्यवस्थाओं पर तीखा व्यंग्य करती है। कवि उस भारत की तलाश करता है जहां सत्य, अहिंसा और न्याय आधारित जीवन था। आज ये मूल्य केवल सहारे की लाठी बनकर झूम रहे हैं। स्थिरता और नैतिक दृढ़ता का अभाव उजागर करते हैं। 'मेरा हिंदुस्तान कहाँ है' कविता में सामाजिक व्यवस्थाओं पर व्यंग्य करते हुए कवि कहते हैं-

सत्य- अहिंसा की लाठी को
टेक-टेक कर झूम रहा है
या नेताओं के इंगित से
झोपड़ियों को फूंक रहा है

नवयुवकों-सा सड़क नापता
दफ्तर-दफ्तर घूम रहा है
नौकरियों की रेल जहाँ हो
वह स्टेशन ढूंढ रहा है
अरे, अरे कोई बतला दे
मेरा हिंदुस्तान कहाँ है ?[8]

कविता की पंक्तियाँ सत्ता की क्रूरता और सामाजिक अन्याय को उजागर करती हैं। झोपड़ियाँ नेताओं के इशारे पर उजाड़ दी जाती हैं। बेरोज़गार युवा अपनी पहचान और भविष्य तलाशते हैं। नौकरियों के अवसर दूर-दूर हैं मानो किसी अनजान स्टेशन पर रुकने वाली रेल हों। अंतिम प्रश्न, 'अरे, अरे कोई बतला दे / मेरा हिंदुस्तान कहाँ है?' केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि नैतिक और न्यायपूर्ण भारत की तलाश को दर्शाता है। कविता आज के हिंदुस्तान में मूल्यों, समानता और अवसरों की कमी पर तीखा व्यंग्य करती है और पाठक को सोचने पर मजबूर करती है। 'सत्तन का विद्रोह' में जाति और आर्थिक विषमता का विरोधाभास उजागर किया गया है। सत्तन को सीमित अवसर मिलते हैं जबकि समाज और आर्थिक संरचना गरीब और पिछड़े वर्ग को सम्मान तथा अवसर से वंचित रखती है। कवि कहते हैं-

"सत्तन ख़ुश था कि अब उसकी बेटी
मेले में खा सकेगी जलेबी,
और झूल सकेगी झूला
बैठकर दूसरे बच्चों के साथ।"[9]

कवि इस कविता में आर्थिक असमानता और गरीबों की सीमित खुशियों को संवेदनशील ढंग से दिखाते हैं। सत्तन की छोटी-सी खुशी भी बड़े संघर्ष के बाद संभव होती है। व्यंग्य अमीर-गरीब के अंतर और सामाजिक न्याय व समान अवसर की कमी पर केंद्रित है। 'पेट के लिए' कविता में महंगाई और आर्थिक संकट को स्पष्ट रूप में दिखाया गया है। राशन की भीड़ और बच्चों की चोट आम आदमी की पीड़ा दर्शाती है। कवि कहते हैं-

"शहर की
एक राशन की दुकान पर
बिखरी हुई भीड़ में
हंगामा हो जाता है
भीड़ की हाथापाई में
घायल हो जाते हैं
दो बच्चे।"[10]

कवि ने 'पेट के लिए' में आर्थिक असमानता और महंगाई की भयावहता संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत की है। राशन की भीड़ और बच्चों का घायल होना गरीबों के संघर्ष और व्यवस्था की क्रूरता को उजागर करता है। उनका साहित्य दर्शाता है कि आतंकवाद केवल जीवन को नहीं बल्कि बचपन, जिज्ञासा और मानवीय भविष्य

को भी प्रभावित करता है। कविता 'खिलौना' में उन्होंने मासूम बच्चों पर आतंकवाद की भयावहता और इसके सामाजिक प्रभाव पर तीखा व्यंग्य किया है।

"वो कहते हैं
बच्चा 'बम' नहीं बनाता
बम नहीं चलाता
बस देखता हैं
बच्चा जिज्ञासु है
अब वह पेड़ से
फल गिरने का कारण
नहीं जानना चाहता
वह जानना चाहता है
सड़क पर गिरे खिलौने का अर्थ
वह नहीं जानता कि यह खिलौना
गिरा नहीं
गिराया गया है!"[11]

कविता 'खिलौना' आतंकवाद पर संवेदनशील और तीखा व्यंग्य प्रस्तुत करती है। कवि मासूम बच्चे की दृष्टि से हिंसा की भयावहता दिखाते हैं। बाल जिज्ञासा दब जाती है। खिलौना खुशी का प्रतीक नहीं रहकर भय और अनिश्चित मृत्यु का संकेत बन जाता है। यह व्यंग्य समाज और व्यवस्था की आत्मसंतुष्टि पर कटाक्ष करता है। कविता 'दंगा' में वागीश सारस्वत ने धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा और सामाजिक विघटन पर तीखा व्यंग्य किया है। जलती झोपड़ियाँ, कटे हाथ और बिखरे सपने समाज की पीड़ा दर्शाते हैं।

□पिछले दंगों में
उसकी झोपड़ी जल गई थी
इन दंगों में
उसके हाथ कट गए□[12]

कविता में दंगों के माध्यम से समाज में हिंसा और निर्दोषों की पीड़ा उजागर की गई है। लगातार उत्पीड़न जीवन की असुरक्षा और मानव अधिकारों, सपनों व आशाओं के विनाश को दर्शाता है। यह व्यंग्य पाठक को सोचने पर मजबूर करता है। 'धरती बाँझ नहीं है' कविता की पंक्तियों में 'पौवा' अवैध रिश्वत का प्रतीक है। कवि व्यंग्यात्मक रूप से दिखाते हैं कि पुलिस का ध्यान अपराध से नहीं बल्कि लाभ से जुड़ा है। रिश्वत न देने पर डंडे या उत्पीड़न मिलता है। व्यंग्य पुलिस की क्रूरता और नागरिकों की सुरक्षा की विडंबना उजागर करता है।

"पौवा माँगेगा
मुझे मालूम है तू नहीं दे पाएगा
और डंडे खाइएगा
इसलिए संभाल
यह भारतीय पुलिस है
इसके चक्कर में मत पड़
इसके चक्कर में पड़ेगा तो
चार सौ बीसी के चक्कर में फँस जाएगा"
और अपना खेल चौपट हो जाएगा।"[13]

कवि दिखाते हैं कि पुलिस कानून का पालन कराने के बजाय आम आदमी को फँसाने का माध्यम बन चुकी है। रिश्वत, झूठे आरोप और सत्ता का दुरुपयोग जीवन को अस्त-व्यस्त कर देता है। व्यंग्य व्यवस्था की क्रूरता, भ्रष्टाचार और अन्याय को उजागर करते हुए चेतना और संवेदनशीलता बनाए रखने का संदेश देता है। कवि ने 'दर्द की पालकी' में लिंग असमानता पर तीखा व्यंग्य किया है। उन्होंने दिखाया कि समाज महिलाओं के अधिकारों और इच्छाओं की अनदेखी कर उन्हें सीमित कर देता है। 'दर्द की पालकी' कविता में कवि कहते हैं-

"बाप के लिए दर्द होती है बिटिया
दहेज जुटाने में कट जाती है उम्र
दहेज नहीं जुटाता
बाप का दिल बैठ जाता है नीचे
दर्द देखता है आँख मींचे"[14]

कवि ने इन पंक्तियों में दहेज प्रथा और लिंग असमानता पर व्यंग्य किया है। बेटी की शादी में दहेज की जिम्मेदारी परिवार पर भारी पड़ती है। यदि दहेज पर्याप्त न हो तो पिता को चिंता और दुख होता है। कवि ने दहेज प्रथा पर तीखा व्यंग्य किया है। 'दहेज के लालच में जलाई गई अबला' पंक्तियाँ नारी की असहायता और समाज की अमानवीयता को उजागर करती हैं। यह प्रथा हिंसा और मृत्यु की जड़ बनती है। प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ वागीश सारस्वत की कविता 'मेरा भारत महान' से उद्धृत हैं-

"आज उसने नहीं देखा
निर्दोष लोगों पर
चलता हुआ छुरा
दहेज के लालच में
जलाई गई अबला"[15]

कविता 'मेरा भारत महान' दहेज हत्या और स्त्री हिंसा पर तीखा व्यंग्य करती है। कवि दिखाते हैं कि राष्ट्र की वास्तविक महानता सामाजिक न्याय, नारी सुरक्षा और मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी है, न कि नारों या उत्सवों से। वागीश सारस्वत 'सँभल बटोही' कविता में नारी की सामाजिक स्थिति पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं-

□अग्नि परीक्षा देखकर भी
सीता की लाज नहीं बचती
क़दम-क़दम पर लंकाएँ हैं
और रावण की बस्ती है।□[16]

प्रस्तुत पंक्तियाँ वागीश सारस्वत की कविता 'सँभल बटोही' से हैं। कवि ने नारी की सामाजिक स्थिति पर तीखा व्यंग्य किया है। सीता की अग्नि परीक्षा से भी स्त्री का सम्मान समाज में नहीं बचता। हर कदम पर शोषण, संदेह और हिंसा की संभावनाएँ हैं। 'लंका' और 'रावण' समाज में स्त्री की अस्मिता को खतरे का प्रतीक हैं।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि वागीश सारस्वत हिंदी साहित्य के एक सजग, संवेदनशील और सामाजिक सरोकारों से गहराई से जुड़े रचनाकार हैं। उनका व्यंग्य केवल हास्य या कटाक्ष तक सीमित नहीं रहता बल्कि वह समाज की विसंगतियों, अन्यायपूर्ण व्यवस्थाओं और मानवीय पीड़ा को उजागर करने का सशक्त माध्यम बनता है। वे लोकतंत्र, न्याय व्यवस्था, राजनीति, भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता, जातिवाद, दहेज प्रथा, स्त्री उत्पीड़न, आतंकवाद और सांप्रदायिक हिंसा जैसे ज्वलंत मुद्दों पर तीखा और प्रभावी व्यंग्य प्रस्तुत करते हैं।

वागीश सारस्वत की कविताएँ और व्यंग्य रचनाएँ आम आदमी के जीवन संघर्ष, उसकी हताशा, पीड़ा और सीमित खुशियों को संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त करती हैं। 'एकलव्य का अंगूठा' से लेकर 'मेरा भारत महान' तक उनकी रचनाएँ यह संदेश देती हैं कि वास्तविक राष्ट्र-निर्माण केवल नारों और उत्सवों से नहीं बल्कि न्याय, समानता, नैतिकता और मानवीय मूल्यों से संभव है। उनका व्यंग्य सोए हुए समाज को झकझोरने, प्रश्न उठाने और आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार उनका साहित्य सामाजिक चेतना जगाने वाला, सुधारोन्मुख और जनपक्षधर है। उनका व्यंग्य न केवल यथार्थ का आईना है बल्कि एक बेहतर, न्यायपूर्ण और संवेदनशील समाज की दिशा में सार्थक हस्तक्षेप भी करता है।

संदर्भ संकेत सूची:-

1. उपाध्याय प्रिया, वागीशोदय, यश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली- 32, प्रथम संस्करण- 2018, पृ.63
2. पाण्डेय, एस. एस., समाजशास्त्र, मैकग्रॉ हिल एजुकेशन, प्रकाशन वर्ष - 2020, पृ.41
3. सारस्वत वागीश, एकलव्य का अंगूठा, परिदृश्य प्रकाशन, मुंबई, प्रथम संस्करण, 2005, पृ.15
4. वही, पृ.18
5. वही, पृ.89
6. वही, पृ.101
7. वही, पृ.39
8. वही, पृ.100
9. वही, पृ.36

10. वही, पृ.14
11. वही, पृ.33
12. वही, पृ.27
13. वही, पृ.91
14. वही, पृ.71
15. वही, पृ.42
16. वही, पृ.59

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.